International Journal of Research in Social Sciences
Vol.10 Issue 08, August 2020,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

भारत—अमेरिका संबंधों में नए रुझानों के उद्भव का एक महत्वपूर्ण अवलोकन्

डॉ. चक्रधर ग. बागडे
राजनिती विज्ञान विभाग प्रमुख
शामराव बापू कापगते आर्टस कॉलेज साकोली जि. भंडारा

सारांश

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद, दुनिया के पीछे दो शक्तिशाली राष्ट्र उभरे, कम्युनिस्ट विचारधारा वाले रूस और पूंजीवादी दिमाग वाले अमेरिका। रूस ने वारसॉ संधि की स्थापना की और संयुक्त राज्य अमेरिका ने नाटो संधि की स्थापना की। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद, एशिया और अफ्रीका में ब्रिटिश शासन के तहत कई देश स्वतंत्र हो गए। हमारा देश भी अंग्रेजों की गुलामी से मुक्त हुए देशों में से एक था। इन शक्तिशाली राष्ट्रों ने नए स्वतंत्र राष्ट्रों को अपने—अपने समूहों में खींचने की कोशिश की। १९४७ से १९९० तक की अवधि को दुनिया भर में शीत युद्ध के रूप में जाना जाता था। शीत युद्ध के दौरान, एशियाई महाद्वीप के देशों, जैसे चीन, भारत और वियतनाम ने रूस का पक्ष लिया। इसलिए, एशिया में रूस का दबदबा था। १९८७ के बाद, मिखाइल गोर्बाचेव की सुधारवादी नीतियों ने पंद्रह नए राज्यों का गठन किया, जिसने रूस को एकजुट किया। इसने रूस को कमजोर कर दिया और संयुक्त राज्य अमेरिका को एशिया में प्रवेश करने की अनुमति दी। १९९१ में, भारत सरकार ने अपनी अर्थव्यवस्था को खोल दिया और अमेरिकी कंपनियां विदेशी निवेश के साथ भारत आने लगीं। जैसे ही भारत ने वैश्वीकरण और उदारीकरण की नीति अपनाई, भारतीय अर्थव्यवस्था की यात्रा साम्यवादी अर्थव्यवस्था से पूंजीवादी अर्थव्यवस्था तक शुरू हुई। परिणामस्वरूप, भारत की विदेश नीति रूस से संयुक्त राज्य अमेरिका में स्थानांतरित हो गई। इसी कारण १९९१ के बाद भारत और अमेरिका के बीच वैचारिक खाई कम होने लगी। आज अमेरिका भारत को अपना सबसे करीबी दोस्त मानता है। इस लेख में, मैंने भारत और संयुक्त राज्य अमेरिका के बीच बदलते संबंधों की समीक्षा करने की कोशिश की है।

प्रस्तावना

१५ अगस्त १९४७ को भारत अंग्रेजों की गुलामी से आजाद हुआ। इस समय, भारत कई विकास मुद्दों का सामना कर रहा था। नव स्वतंत्र भारत का नेतृत्व पंडित नेहरू ने किया था। पंडित नेहरू का झुकाव साम्यवादी विचारों की ओर था। इसने रूस को उनके करीब महसूस कराया। भारत के प्रधान मंत्री, पंडित नेहरू ने तटस्थता की नीति अपनाई है, जिसका अर्थ है कि रूस और संयुक्त राज्य अमेरिका को राष्ट्रों के किसी भी समूह में शामिल हुए बिना तटस्थ रहना चाहिए। अलगाव शब्द पहली बार पंडित नेहरू ने १९५४ में कोलंबो में एक भाषण में गढ़ा था। प्रधान मंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू के अनुसार, गुटनिरपेक्षता का अर्थ है किसी भी राष्ट्र के प्रतीक के बिना राष्ट्रीय विकास के लिए दोनों देशों की मदद लेना। पंडित नेहरू के बाद इंदिरा गांधी प्रधानमंत्री बनीं। थोड़े समय को छोड़कर, वह अपनी मृत्यु (१९८४) तक भारत की प्रधान मंत्री रहीं। १९८४ में राजीव गांधी प्रधानमंत्री बने। रूस इन तीन प्रधानमंत्रियों के समय से ही भारत का घनिष्ठ मित्र रहा है। इस अवधि के दौरान, भारत—अमेरिका संबंध लगभग समाप्त हो गए थे। स्वतंत्रता के बाद, भारत ने राष्ट्रीय

International Journal of Research in Social Sciences
Vol.10 Issue 08, August 2020,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

विकास के लिए पंचवर्षीय योजना को अपनाया। हालाँकि, पड़ोसी देश पाकिस्तान ने संयुक्त राज्य अमेरिका को पछाड़ दिया। १९५४ में अमेरिका ने पाकिस्तान के साथ मिलकर सैंटो नाम का एक संगठन बनाया, जो भारत को पसंद नहीं था। १९६४ और १९७१ के भारत—पाकिस्तान युद्धों में, अमेरिका ने पाकिस्तान से सीधा समर्थन मांगा। कश्मीर मुद्दे पर संयुक्त राष्ट्र में अमेरिका ने भी पाकिस्तान का पक्ष लिया। हालांकि इस दौरान रूस भारत के पक्ष में मजबूती से खड़ा रहा। मिखाइल गोर्बाचेव १९८५ में रूस के राष्ट्रपति बने। उन्होंने रूस में सुधारवाद की नीति अपनाई। पेरिस्त्रोइका और ग्लासनॉट उनके सुधार कार्यक्रम के प्रमुख शब्द थे। मिखाइल गोर्बाचेव की सुधारवादी नीतियों के कारण सोवियत संघ का विघटन हुआ और १५ देशों को रूसी स्टील की बेड़ियों से बाहर निकाला गया। आगामी अवधि में, रूस कमजोर हो गया और भारत ने आर्थिक सुधार की नीति अपनाई। इन दोनों घटनाओं ने भारत—अमेरिका संबंधों को प्रगाढ़ बना दिया। निम्नलिखित भारत और संयुक्त राज्य अमेरिका के बीच बदलते संबंधों की समीक्षा करने का एक प्रयास है।

शीत युद्ध के दौरान भारत—अमेरिका संबंध

शीत युद्ध के कारण १९४६ से १९८९ तक पूरी दुनिया दो गुटों में बंट गई थी। शीत युद्ध में, एक समूह संयुक्त राज्य अमेरिका और दूसरा सोवियत संघ का था। दुनिया की हर समस्या गुट के हितों पर आधारित थी। शीत युद्ध के परिणामस्वरूप नाटो, सीआईटीओ, सेंटो और वार्सा संधि जैसे कई सैन्य समूहों का गठन हुआ। ये संगठन दुनिया के अधिक से अधिक क्षेत्रों में वर्चस्व के लिए और अपने समूह में अधिक देशों को शामिल करने के लिए प्रतिस्पर्धा कर रहे थे। यद्यपि भारत ने दोनों समूहों के साथ गुटनिरपेक्षता की नीति अपनाई, सोवियत संघ के प्रति भारत का झुकाव परोक्ष रूप से इस तथ्य के कारण था कि भारत के शीर्ष अधिकारी समाजवादी विचारधारा के समर्थक थे। यह बात अमेरिका को पसंद नहीं आई क्योंकि भारत एशिया का एक महत्वपूर्ण और बड़ा देश था। हालाँकि, भारत किसी भी समूह में शामिल नहीं हुआ और एक अलग समूह का गठन किया जिसे गैर—गठबंधन कहा जाता है। गुट निरपेक्ष संगठन को विश्व में तीसरे समूह के रूप में जाना जाता था। दुनिया के कई देश इस संगठन के सदस्य थे। उसी समय, भारत में कुछ घटनाओं के कारण संयुक्त राज्य अमेरिका भारत से दूर जा रहा था जिसने संयुक्त राज्य अमेरिका के अहंकारी रवैये को गति दी।

१) भारत—पाकिस्तान युद्धः १९६४ और १९७१ के भारत—पाकिस्तान युद्धों के दौरान, अमेरिका ने चीन सहित पाकिस्तान का पूरा सहयोग किया, जो भारत के लिए बहुत चिंता का विषय था। भारत ने रूस के साथ २० साल तक दोस्ती की और एक सहयोग समझौते पर हस्ताक्षर किए, जिसकी पुष्टि अमेरिका और चीन दोनों ने की। अमेरिका लगातार पाकिस्तान का समर्थन कर रहा था। परिणामस्वरूप, भारत और रूस के बीच मित्रता की संधि पर हस्ताक्षर किए गए। यह संयुक्त राज्य अमेरिका को पसंद नहीं था।

२) भारत—रूस मैत्री संधि—१९७१: १९७१ में रूस के विदेश मंत्री आंद्रेई ग्रेमिको ने भारत का दौरा किया। इस यात्रा के दौरान ९ अगस्त १९७१ को भारत और रूस ने २० साल के मैत्री समझौते पर हस्ताक्षर किए। समझौते पर भारत की ओर से विदेश मंत्री स्वर्णसिंह और रूस की ओर से विदेश मंत्री ग्रोमिको ने हस्ताक्षर किए। समझौते के अनुसार, दोनों देशों ने आपसी रक्षा समझौते पर हस्ताक्षर किए और दिखाया कि सोवियत—भारतीय मित्रता अविभाज्य थी। रूस ने विज्ञान, कला, साहित्य,

International Journal of Research in Social Sciences
Vol.10 Issue 08, August 2020,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

शिक्षा और स्वास्थ्य के क्षेत्रों में भारत की मदद करने का वादा किया है। इसी तरह, २ अक्टूबर १९७२ को दोनों देशों ने विज्ञान और प्रौद्योगिकी पर एक समझौते पर हस्ताक्षर किए।

३) १९७४ पोखरण परमाणु परीक्षण: १९७४ में, भारत ने पोखरण रेगिस्तान में अपने दम पर परमाणु परीक्षण करके पूरी दुनिया को चौंका दिया, क्योंकि संयुक्त राष्ट्र के स्थायी सदस्यों को छोड़कर भारत से पहले किसी अन्य देश ने ऐसा परमाणु परीक्षण नहीं किया था। यह घटना अमेरिका के अहंकार के लिए आघात साबित हुई। परमाणु परीक्षण के बाद भारत को परमाणु हथियारों के साथ दुनिया के सबसे शक्तिशाली देशों की सूची में शामिल किया गया था। यद्यपि तत्कालीन प्रधान मंत्री इंदिरा गांधी ने परमाणु परीक्षण को शांतिपूर्ण परीक्षण कहा था, भारत के परमाणु परीक्षण के बाद, संयुक्त राज्य अमेरिका ने भारत को परमाणु सामग्री और ईंधन की आपूर्ति पर प्रतिबंध लगा दिया और भारत पर कई प्रतिबंध लगाए। इस घटना ने भारत और अमेरिका के बीच काफी कड़वाहट पैदा कर दी थी। लेकिन इस विचित्र स्थिति में रूस ने भारत का समर्थन किया और भारत और रूस के साथ संबंध मजबूत किए। पोखरण परमाणु परीक्षण के बाद भारत और पड़ोसी चीन दोनों में दहशत फैल गई। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी भारत पर तरह—तरह के प्रतिबंध लगाने का दबाव था। भारत और संयुक्त राज्य अमेरिका के बीच अंतर्राष्ट्रीय संबंध सामान्य रहे हैं लेकिन उनमें सुधार नहीं हुआ है।

४) अंतरिक्ष में भारत के आर्यभत्र उपग्रह का प्रक्षेपण: परमाणु ऊर्जा कार्यक्रम के साथ—साथ अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी भी अमेरिकी अहंकार का सूचक था। भारत ने १९७२ में भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन की स्थापना की और १९ अप्रैल १९७५ को रूस की मदद से भारत के पहले उपग्रह आर्यभट्ट को अंतरिक्ष में प्रक्षेपित किया। आज तक किसी भी विकासशील देश ने ऐसा करने की हिम्मत नहीं की और ४ अप्रैल १९८३ को भारत के पहले अंतरिक्ष यात्री राकेश शर्मा ने अंतरिक्ष में प्रवेश किया। अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी में भारत का यह बढ़ता प्रभाव संयुक्त राज्य अमेरिका को परेशान कर रहा था।

४) १९९८ पोखरण—२: १९९८ तत्कालीन प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने पोखरण में परमाणु परीक्षण कर पूरी दुनिया को चौंका दिया था। इस परीक्षण में भारत ने परमाणु परीक्षण के साथ—साथ हाइड्रोजन बम का भी परीक्षण किया था। इस परीक्षण के बाद, इज़राइल को छोड़कर पूरी दुनिया भारत के खिलाफ खड़ी हो गई और संयुक्त राज्य अमेरिका सहित कई देशों ने भारत पर आर्थिक प्रतिबंध लगा दिए। अमेरिका ने भारत में अपने राजदूत को भी वापस बुला लिया था। दुनिया के अधिकतर देशों ने भारत पर प्रतिबंध लगा रखे थे।

भारत—अमेरिका संबंधों में सुधार का समय

पोखरण—२ परीक्षण के बाद से भारत और अमेरिका के बीच पिछले कुछ समय से तनाव चल रहा था। २००२ में, अटल बिहारी वाजपेयी ने अमेरिकी महासभा को संबोधित किया और भारत और अमेरिका के बीच एक नए रिश्ते की नींव रखी। पूर्व प्रधान मंत्री अटल बिहारी वाजपेयी के तहत भारत और संयुक्त राज्य अमेरिका के बीच संबंधों में सुधार हुआ है। निम्नलिखित घटनाओं ने इसका कारण बना:

भारत—अमेरिका असैन्य परमाणु समझौता

भारत—अमेरिका नागरिक समझौते पर २००५ में हस्ताक्षर किए गए थे। उस समय जॉर्ज डब्ल्यू बुश संयुक्त राज्य अमेरिका के राष्ट्रपति थे। भारत में मनमोहन सिंह के नेतृत्व में संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन

International Journal of Research in Social Sciences
Vol.10 Issue 08, August 2020,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

की सरकार थी। भारत ने अपना पहला परमाणु परीक्षण १९७४ में पोखरण में किया था। भारत को तब परमाणु क्षेत्र में प्रतिबंधों का सामना करना पड़ा था। भारत को संयुक्त राज्य अमेरिका और कुछ यूरोपीय देशों से परमाणु प्रौद्योगिकी और परमाणु ईंधन प्राप्त करने से प्रतिबंधित कर दिया गया था। भारत १९७४ से इस तकनीक की मांग कर रहा है; हालांकि, प्रतिबंध नहीं हटाए गए। इस बीच, १९९८ में, भारत ने अपना दूसरा परमाणु परीक्षण किया और खुद को परमाणु—सशस्त्र राष्ट्र घोषित किया। बाद में भारत पर प्रतिबंध कड़े कर दिए गए। एनपीटी और सीटीबीटी समझौते पर हस्ताक्षर किए बिना भारत ने विकास, शांति के लिए अपना परमाणु कार्यक्रम जारी रखा। चूंकि भारत समझौते के दायरे से बाहर था, इसलिए अंतर्राष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी (आईएईए) के पास रिएक्टरों का निरीक्षण करने के लिए अघोषित दौरे करने का अधिकार नहीं था। भारत और संयुक्त राज्य अमेरिका के बीच इस समझौते से दो बातों पर संयुक्त राज्य अमेरिका और तीन बातों पर भारत ने सहमति व्यक्त की। समझौते के तहत अमेरिका भारत को एकमुश्त छूट देने पर राजी हो गया। वन—टाइम वीवर किसी ऐसे देश के साथ किसी भी परमाणु क्षेत्र में सहयोग नहीं करने की अमेरिकी नीति है जिसने सैन्य उद्देश्यों के लिए यूरेनियम का उपयोग किया है; लेकिन अगर हम भारत के साथ व्यापार शुरू करना चाहते हैं, तो हमें कानून बदलना होगा। इसलिए इसे एकमुश्त छूट कहा गया है।दूसरा, भारत को परमाणु आपूर्ति को नियंत्रित करने वाले परमाणु आपूर्तिकर्ता समूह की सदस्यता देने का प्रयास किया जाएगा। क्योंकि इसके बिना भारत के लिए यूरेनियम हासिल करना मुश्किल होगा।
भारत द्वारा स्वीकार की गई पहली शर्त यह है कि भारत एक नागरिक परमाणु परियोजना और एक सैन्य परमाणु परियोजना के बीच अंतर करेगा। दूसरा, असैन्य परमाणु परियोजनाओं को आईएईए जांच के दायरे में लाया जाएगा। तीसरी शर्त यह है कि भारत में परमाणु प्रौद्योगिकी की आपूर्ति करने वाले देशों के साथ व्यापार पर कानून बनाया जाए। दोनों देशों के बीच सहमति के बाद परमाणु समझौते पर हस्ताक्षर किए गए। इस समझौते ने भारत और संयुक्त राज्य अमेरिका के बीच संबंधों को बेहतर बनाने में मदद की।

राष्ट्रपति बराक ओबामा की भारत यात्रा

जनवरी २०१५ में बराक ओबामा भारत दौरे पर आए थे। वह २६ जनवरी २०१५ गणतंत्र दिवस समारोह में मुख्य अतिथि थे। ओबामा की भारत यात्रा के दौरान भारत—अमेरिका संबंध सर्वकालिक उच्च स्तर पर थे। यात्रा के दौरान, आतंकवाद के उन्मूलन और शांतिपूर्ण सह—अस्तित्व की स्थापना के लिए भारत और संयुक्त राज्य अमेरिका के बीच कई महत्वपूर्ण समझौतों पर हस्ताक्षर किए गए। . दोनों देशों ने जलवायु परिवर्तन, आतंकवाद, गरीबी, कुपोषण और मानवाधिकार जैसे अंतरराष्ट्रीय मुद्दों पर एक साथ काम करने की इच्छा भी व्यक्त की।

डोनाल्ड ट्रंप का भारत दौरा

२०१७ में, डोनाल्ड ट्रम्प संयुक्त राज्य अमेरिका के नए राष्ट्रपति बने। इस बीच, भारत और अमेरिका के बीच संबंध खराब हुए हैं। डोनाल्ड ट्रंप का भारत विरोधी रवैया शुरू से ही बेहद खास रहा है. ट्रंप ने अपने चुनाव प्रचार के दौरान यह बात कही थी। डोनाल्ड ट्रंप के सत्ता संभालने के बाद से प्रधानमंत्री मोदी व्हाइट हाउस जाने वाले पहले विदेशी मेहमान थे। नरेंद्र मोदी के मद्देनजर दोनों देशों के बीच कई समझौतों पर दस्तखत हुए हैं.हाल ही में डोनाल्ड ट्रंप ने मुस्लिम आतंकवाद को खत्म

International Journal of Research in Social Sciences
Vol.10 Issue 08, August 2020,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

करने के लिए भारत से विशेष मदद मांगी है. ट्रंप ने भारत से अफगानिस्तान में सहयोग करने को कहा था। इसके अलावा, अमेरिका को पाकिस्तान पर नजर रखने के लिए भारत के समर्थन की जरूरत है।

भारत—अमेरिका संबंधों में सुधार के प्रमुख कारण

१९९१ में जब से भारत ने नए आर्थिक सुधारों को अपनाया, भारत जमीनी स्तर पर एक प्रमुख शक्ति बन गया है। भारतीय अर्थव्यवस्था, जो १९९० में स्वर्ण गिरवी चलाती थी, अब ब्रिटेन को पीछे छोड़ते हुए दुनिया की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है। वहीं, सूचना प्रौद्योगिकी के विकास में भारतीयों की अहम भूमिका है। आज, संयुक्त राज्य अमेरिका में दुनिया का सबसे बड़ा आईटी उद्योग है, जिसमें भारतीय काम कर रहे हैं। पिछले तीन वर्षों में, कई भारतीय इंजीनियर और व्यावसायिक छात्र संयुक्त राज्य में बस गए हैं, और जब से उन्हें ग्रीन कार्ड मिला है, वे अमेरिकी राजनीति में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। यही कारण है कि राष्ट्रपति पद के लिए दौड़ रहे अमेरिकी व्यक्ति को भारतीयों की जरूरत है। इसे आप नीचे दी गई जानकारी से देख सकते हैं।

अमेरिकी राजनीति में भारतीय मूल के मतदाताओं का बढ़ता प्रभाव

संयुक्त राज्य अमेरिका में रहने वाले भारतीयों को भारतीय—अमेरिकी कहा जाता है क्योंकि उनकी जड़ें भारत में हैं। १९८० में आयोजित अमेरिकी जनगणना ब्यूरो ने एशियाई भारतीयों को स्वदेशी अमेरिकियों से अलग करने के लिए एक और शब्द गढ़ा। संयुक्त राज्य अमेरिका की जनसंख्या लगभग ३२८२ मिलियन है। २०१० और २०१७ के बीच, कुल ८ लाख भारतीय अप्रवासी संयुक्त राज्य अमेरिका में बस गए। यह अन्य देशों की तुलना में अधिक है। संयुक्त राज्य अमेरिका में प्रवास करने वाले भारतीयों की संख्या दूसरे स्थान पर है। अमेरिका में हर ६ अप्रवासियों में से १ भारतीय है। संयुक्त राज्य अमेरिका में भारतीयों की बढ़ती संख्या अमेरिकी राष्ट्रपति चुनाव के परिणाम को बदलने के लिए काफी मजबूत है। दूसरा कारण यह है कि संयुक्त राज्य अमेरिका में उच्च पदों वाले भारतीय—अमेरिकी शिक्षा और काम के कारण वहां रहते हैं और नागरिकता प्राप्त करने में सक्षम हैं। यही कारण है कि आने वाली पीढ़ियां अपने अस्तित्व के लिए पुरानी पीढ़ियों का अनुसरण करती हैं और उच्च पदों को प्राप्त करती हैं। इसका सबसे अच्छा उदाहरण भारतीय मूल की कमला हैरिस हैं जो संयुक्त राज्य अमेरिका की उपराष्ट्रपति हैं।

प्रशांत क्षेत्र में चीन के बढ़ते प्रभाव को कम करने में भारत का महत्व

चीन के वर्तमान राष्ट्रपति शी. जिनपिंग के तहत चीन ने आक्रामक विस्तार की नीति अपनाई है। इस अवधि के दौरान, चीन ने ताइवान, जापान और भारत के साथ अपने सीमा विवाद शुरू किए और अमेरिका से किसी भी खतरे के बावजूद एशिया—प्रशांत क्षेत्र में अपनी कट्टरता जारी रखी। इस क्षेत्र में चीन के बढ़ते प्रभाव को कम करने के लिए अमेरिका को भारत जैसे मजबूत देश की जरूरत है। यह अमेरिका को पहचान रहा है। २०१७ में, भारत और संयुक्त राज्य अमेरिका के बीच अंतरराष्ट्रीय संबंधों के चार दशक बीत चुके हैं। अमेरिका और भारत के बीच एक अलग केमिस्ट्री दुनिया की ओर देख रही है। संयुक्त राज्य अमेरिका, जो कभी चीनी सैनिकों की मदद से भारत को हराने की कोशिश करता था, अब चीन से आगे निकलने के लिए भारतीय सैनिकों की मदद की जरूरत है। एशिया में दो महाशक्तियां हैं, एक चीन में और दूसरी भारत में। एशिया में शक्ति संतुलन बनाए रखने के लिए

International Journal of Research in Social Sciences
Vol.10 Issue 08, August 2020,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

भारत का मजबूत होना बहुत जरूरी है और चीन की विस्तारवादी नीति को नियंत्रित करने के लिए अमेरिका को भारत के अलावा कोई और करीबी सहयोगी नजर नहीं आता। इससे अमेरिका के पास भारत के साथ रहने के अलावा कोई विकल्प नहीं बचा है। संयुक्त राज्य अमेरिका ने चीन को नियंत्रित करने के लिए भारत, जापान और ऑस्ट्रेलिया के साथ रक्षा समझौतों पर हस्ताक्षर किए हैं। इसके तहत चारों देशों की सेनाओं ने संयुक्त अभ्यास किया था।

दोनों देश रक्षा और आतंकवाद विरोधी नीति पर सहमत हैं

संयुक्त राज्य अमेरिका ने भारत—प्रशांत क्षेत्र में दीर्घकालिक सुरक्षा और स्थिरता बढ़ाने के लिए रक्षा और आतंकवाद का मुकाबला करने में भारत के साथ सहयोग करने पर सहमति व्यक्त की है। कुछ साल पहले अमेरिका जानबूझकर पाकिस्तान की आतंकी नीति से आंखें मूंद रहा था। अमेरिका को ट्वाइस टावर्स पर हुए आतंकी हमले का खामियाजा भुगतना पड़ा है। इस घटना ने संयुक्त राज्य अमेरिका को आतंकवादी हमले और उस त्रासदी से अवगत कराया जो पाकिस्तानी आतंकवादी हमले के बाद से भारत पर आई है। नतीजतन, संयुक्त राज्य अमेरिका ने पश्तूनों को पीछे छोड़ते हुए भारत के साथ सहयोग करने की नीति अपनाई। भारत और अमेरिका के बीच २+२ कैबिनेट बैठकें राष्ट्रपति बराक ओबामा के समय से ही शुरू हो चुकी हैं। भारत—अमेरिका संबंधों को सुधारने में सैन्य सहायता को एक महत्वपूर्ण कारक माना जाता है। भारत को अमेरिकी सैन्य सहायता में यह शर्त शामिल है कि भारत को सैन्य क्षेत्र में सैन्य हार्डवेयर और प्रौद्योगिकी प्रदान की जाए। पिछले एक दशक में भारत—अमेरिका रक्षा व्यापार शून्य से बढ़कर १५ १५ अरब हो गया है, जिसमें कुछ उन्नत अमेरिकी सैन्य उपकरणों की बिक्री भी शामिल है। उन्नत सैन्य प्रौद्योगिकी विकसित करने में एक विश्व नेता के रूप में, संयुक्त राज्य अमेरिका भारतीय सुरक्षा को बढ़ाने में मदद करने के लिए तैयार है। इस प्रतिबद्धता का एक प्रमुख उदाहरण पिछले जून में सी गार्डियन के मानव रहित हवाई वाहन प्रणाली की बिक्री के लिए ट्रम्प प्रशासन की मंजूरी है।

अमेरिका ने भारत की आतंकवाद विरोधी नीति का समर्थन किया

बदलते भारत—अमेरिका संबंधों का एक महत्वपूर्ण स्तंभ आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई में भारत के साथ बढ़ता सहयोग है। दुनिया के ज्यादातर शांतिप्रिय देश भीषण आतंकी हमलों का सामना कर रहे हैं। भारत कई वर्षों से पाकिस्तान की आतंकवादी गतिविधियों का सामना कर रहा है और दुनिया में बढ़ती आतंकवादी गतिविधियों पर अंकुश लगाने के लिए अपने विचार विश्व मंच पर रख रहा है। राष्ट्रपति ट्रम्प और अन्य अमेरिकी नेताओं ने स्पष्ट कर दिया है कि हम सीमा पार आतंकवाद या आतंकवादी सुरक्षित पनाहगाहों को बर्दाश्त नहीं करेंगे। इस प्रयास के तहत, हमने ट्रम्प प्रशासन के साथ अमेरिका—भारत आतंकवाद विरोधी संवाद शुरू किया। भारत ने दुनिया भर में आतंकवादी गतिविधियों पर अंकुश लगाने के लिए आतंकवादियों का पता लगाने और उनके लिए वित्तीय सहायता प्राप्त करने के लिए क्षेत्रीय और वैश्विक आतंकवादी शिविरों और अभियानों में सहयोग करने की नीति अपनाई है।

भारत और अमेरिका के आर्थिक और व्यापारिक संबंध

International Journal of Research in Social Sciences
Vol.10 Issue 08, August 2020,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell’s Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

भारत वैश्विक अर्थव्यवस्था में आर्थिक विकास के केंद्र में है। नतीजतन, भारत के साथ अमेरिकी व्यापार और निवेश संबंध विकसित हो रहे हैं। द्विपक्षीय व्यापार २००१ में २० २० बिलियन से बढ़कर २०१९ तक ५ ११५ बिलियन हो गया है। बेशक, आपके बाजार के आकार को देखते हुए, माल और सेवाओं दोनों के प्रवाह की पर्याप्त गुंजाइश है, और व्यापार अधिक पारस्परिक बनने की प्रक्रिया में है। ट्रम्प प्रशासन ने व्यापार और निवेश विवादों को तेजी से हल करने के लिए भारत के साथ सहयोग करने की नीति अपनाई है, जो एक दूसरे के बाजारों में निवेश करने के लिए पारस्परिक रूप से फायदेमंद होगा। दोनों देश एक ऐसी नीति तैयार करने पर सहमत हुए जिससे दोनों देशों के बीच आर्थिक आदान—प्रदान और व्यापार में वृद्धि होगी, उभरती प्रौद्योगिकियों में सहयोग की सुविधा होगी और दोनों देशों में रोजगार का सृजन होगा। दोनों देशों ने एक व्यापार नीति को आगे बढ़ाने का फैसला किया है जो भारत को भारत—प्रशांत क्षेत्र में अमेरिकी उद्योगों के लिए एक वैकल्पिक केंद्र बनने के लिए व्यापार और निवेश के माध्यम से रणनीतिक अवसरों का लाभ उठाने की अनुमति देगा। अमेरिकी वस्तुओं और सेवाओं के बढ़ते खुलेपन और अमेरिकी कंपनियों की बढ़ती उपस्थिति बेहतर बुनियादी ढांचे और समग्र कनेक्टिविटी में निजी क्षेत्र के निवेश को प्रोत्साहित करेगी। उदाहरण के लिए, अमेरिकी कंपनियों के पास नई प्रौद्योगिकियां हैं जो भारत को देश भर में १०० स्मार्ट शहरों के निर्माण के अपने महत्वाकांक्षी लक्ष्य को प्राप्त करने में मदद कर सकती हैं। इसके अलावा, अमेरिकी संयुक्त उद्यम वैश्विक उत्सर्जन मानकों को पूरा करते हैं

निष्कर्ष

अमेरिका की राष्ट्रीय सुरक्षा रणनीति यह मानती है कि भारत एशिया—प्रशांत क्षेत्र और उसके बाहर एक प्रमुख वैश्विक शक्ति है। भारत—प्रशांत क्षेत्र के लोगों के साथ—साथ अन्य लोगों की सुरक्षा और समृद्धि के लिए भारत—अमेरिका संबंध विकसित करना महत्वपूर्ण है। दोनों देश मानते हैं कि क्षेत्रीय स्थिरता और सुरक्षा बनाए रखने, सामूहिक विनाश के हथियारों के प्रसार को रोकने और आतंकवाद को खत्म करने की कोशिश करने के लिए दोनों देशों के बीच संबंधों को विकसित करने में समय लगता है। पिछले १७ वर्षों में, दोनों देशों के नेताओं के बीच दोनों देशों, संयुक्त राज्य अमेरिका और भारत के बीच रणनीतिक साझेदारी को मजबूत करने के लिए काफी चर्चा हुई है। इस अवधि के दौरान, रक्षा सहयोग और संयुक्त सैन्य अभ्यास, उच्च प्रौद्योगिकी सहयोग समूह का काम, रणनीतिक साझेदारी में अगला कदम, ऐतिहासिक असैन्य परमाणु समझौता, अमेरिका—भारत व्यापार, रक्षा प्रौद्योगिकी और दोनों देशों के बीच व्यापार में लगभग छह की वृद्धि हुई है। बार। संयुक्त राज्य अमेरिका द्वारा भारत के एक प्रमुख रक्षा भागीदार के रूप में मान्यता से भारत—अमेरिका व्यापार, ऊर्जा, पर्यावरण, विज्ञान, प्रौद्योगिकी, स्वास्थ्य और कई अन्य क्षेत्रों पर महत्वपूर्ण समझौते हुए हैं। ये सभी समझौते इस बात का संकेत हैं कि भारत—अमेरिका संबंध मजबूत हो रहे हैं। दोनों देश स्वतंत्र, सुरक्षित और मुक्त हिंद—प्रशांत क्षेत्र में शांति निर्माण के लिए रणनीतिक साझेदारी बनाने पर सहमत हुए हैं। वहीं, अमेरिकी राजनीति में भारतीयों का बढ़ता प्रभाव अमेरिकी राजनीति को भारत के करीब लाने में मदद कर रहा है। इस सब की परिणति विश्व स्तर पर अमेरिका—भारत संबंधों को मजबूत करना है।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol.10 Issue 08, August 2020,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

राष्ट्रपति ट्रम्प ने २४ और २५ फरवरी, २०२० को भारत का दौरा किया। अहमदाबाद के स्टेडियम में बोलते हुए, राष्ट्रपति ट्रम्प ने भारत को संयुक्त राज्य अमेरिका का सच्चा दोस्त कहा और मोदी ने प्रधान मंत्री वाजपेयी के उस बयान को दोहराया जिसमें उन्होंने हमारे देशों को स्वाभाविक मित्र बताया। अब यह आप पर निर्भर है कि आप इस शब्दावली को परिष्कृत करें। हमें एक लचीली और मैत्रीपूर्ण साझेदारी का निर्माण करना चाहिए जो मजबूत और स्थायी हो। आइए अपने पिछले अवसरों का लाभ उठाएं ताकि आने वाली पीढ़ियों के पास इस समय अमेरिका—भारत संबंधों का वास्तविक परिवर्तन हो सके।

संदर्भ

१. रामपुरकर व्ही. आर., आंतरराष्ट्रीय संबंध, श्री मंगेश प्रकाशन, नागपूर, २००१.
२. देवळाणकर शैलेंद्र, आंतरराष्ट्रीय संबंध व राजकारण,
३. डॉ. अमृतकर प्रशांत, आंतरराष्ट्रीय संबंध, चिन्मय प्रकाशन, औरंगाबाद, २००४.
४. वृत्तपत्रातील लेख
५. वेबसाईटवरील लेख